बाबा की कहानी – याद रहे जुबानी
– सम्राट

(1) **युग पुरुष–** भारत में सदियों से बहुजन समाज अन्याय व गुलामी का शिकार रहा है। समय–समय पर समाज सुधारकों ने उन्हें मुक्ति दिलाने का प्रयास किया। युग पुरुष डॉ0 अम्बेडकर ने गुलामी को जड़ से उखाड़ फेंका। उन्होंनें मानवतावादी संविधान लिखकर बहुजन समाज को नया जीवन दिया।

(2) बाबा साहेब का जन्म– डा० भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 में महू (मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनकी माता भीमाबाई व पिता रामजी सकपाल थे। पिता सेना में सूबेदार थे और महाराष्ट्र में अम्बावडे गाँव के महार परिवार से थे। गाँव के नाम पर ही भीमराव का नाम अम्बेडकर पड़ा।

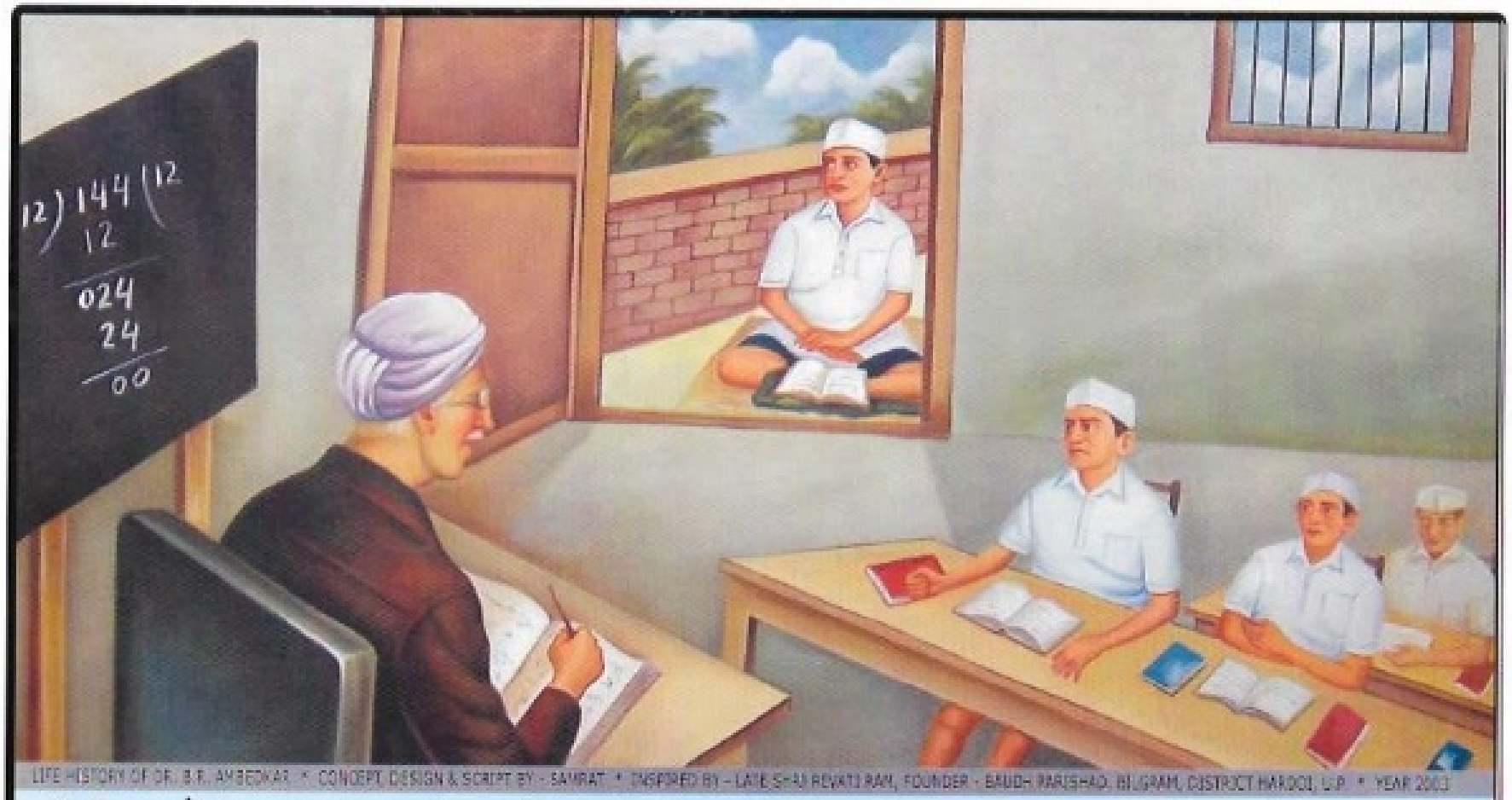

LIFE HISTORY OF DR. B.R. AMBEDKAR * CONCEPT, DESIGN & SCRIPT BY - SAMRAT * INSPIRED BY - LATE SHRI REVATI RAM, FOUNDER - BAUDH PARISHAD, BILGRAM, DISTRICT HARDOI, U.P. * YEAR 2003

(3) भेदभाव का अनुभव– हिन्दू कानून मनुस्मृति के अनुसार दलितों को पढ़ने का अधिकार नहीं है। पिता सूबेदार थे इसलिए किसी तरह भीम को स्कूल में भरती तो करा दिया लेकिन उसे दरवाजे के बाहर ही बैठना पड़ता था। बालक भीम समझ नहीं पाता था कि लोग क्यों उससे दूर रहते हैं।

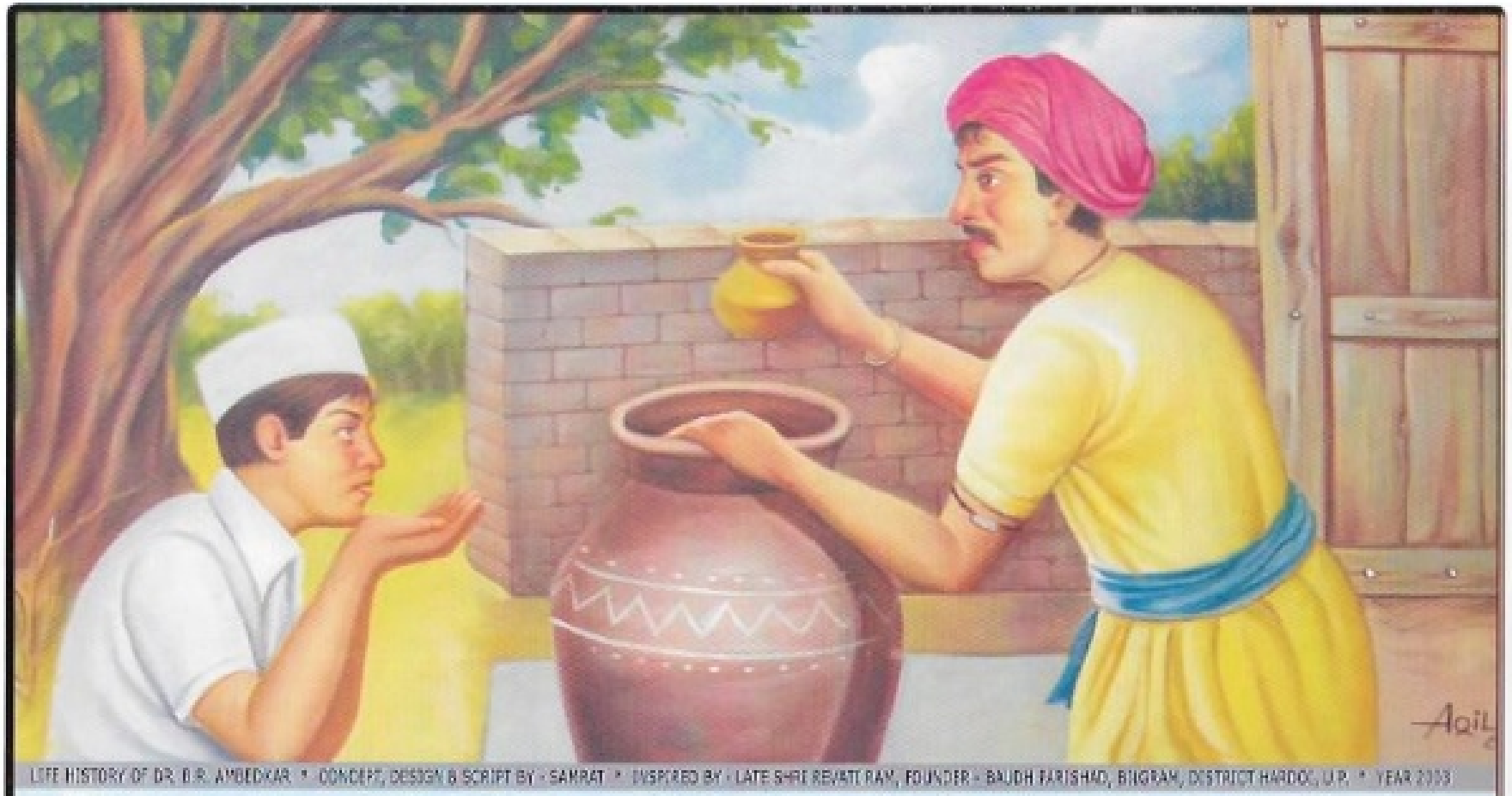

(4) छुआछूत का भूत– भीम को जब प्यास लगती तो स्कूल का चपरासी उन्हें बर्तन तक नहीं छूने देता था। वह कहता कि बर्तन अपवित्र हो जायेंगे। भीम पूछते कि मैं तो इतना स्वच्छ रहता हूँ तो फिर बर्तन कैसे अपवित्र हो जायेंगे। चपरासी कहता कि तुम ठीक कहते हो पर शास्त्रों में ऐसा लिखा है।

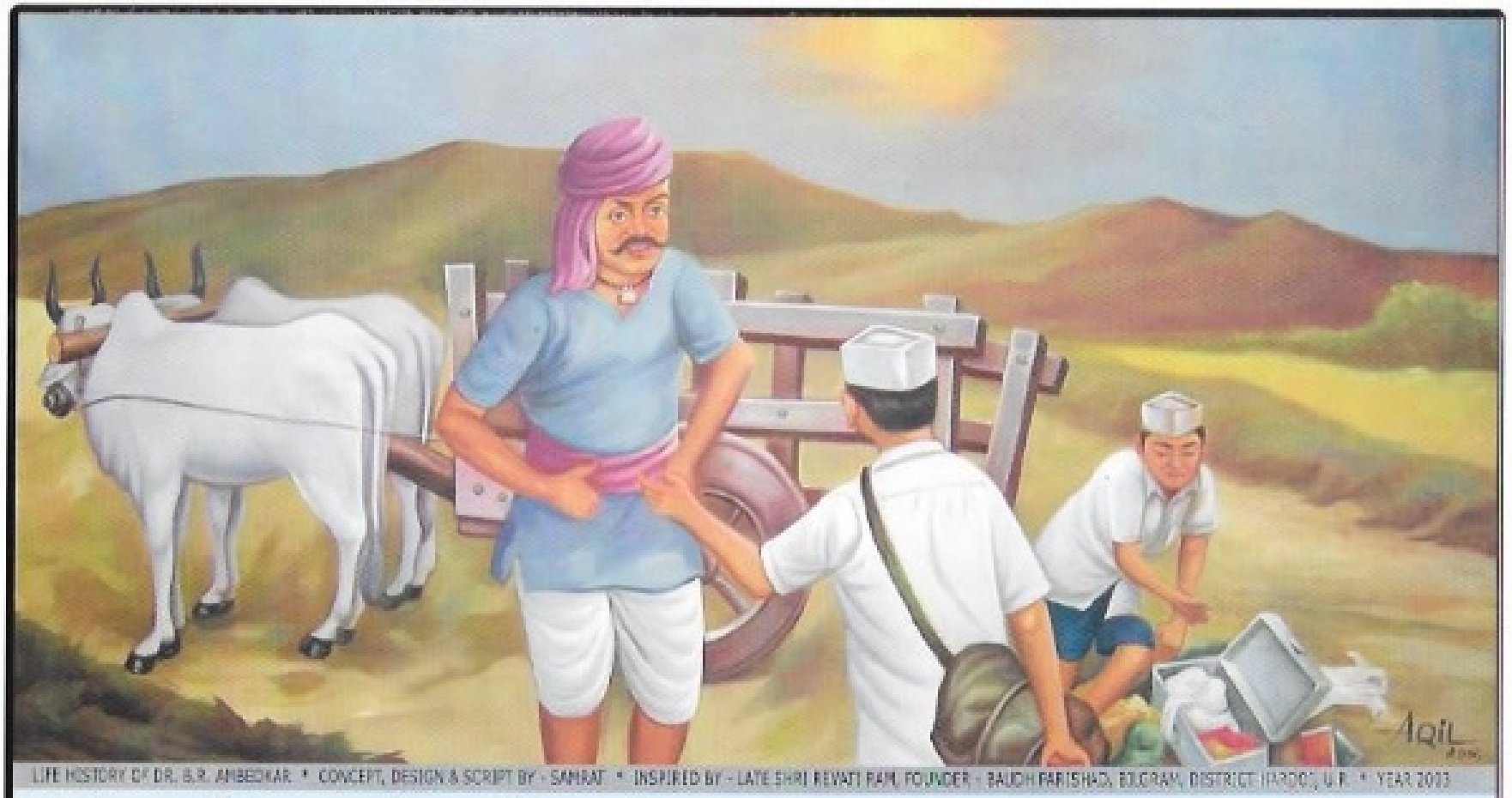

LIFE HISTORY OF DR. B.R. AMBEDKAR * CONCEPT, DESIGN & SCRIPT BY - SAMRAT * INSPIRED BY - LATE SHRI REVATI RAM, FOUNDER - BAUDH PARISHAD, BIJORAM, DISTRICT HARDOI, U.P. * YEAR 2003

(5) दलित और बिजली– दुनिया में केवल हिन्दू ऐसे लोग हैं जिनको दो चीजों से झटका लगता है– बिजली का तार छू जाने पर व दलित की जाति पता लगने पर। एक दिन भीम और उनके भाई बैलगाड़ी में जा रहे थे। रास्ते में जब गाड़ीवान को पता चला कि वे महार हैं तो उसको झटका सा लगा। उसने दोनों को नीचे धकेल दिया।

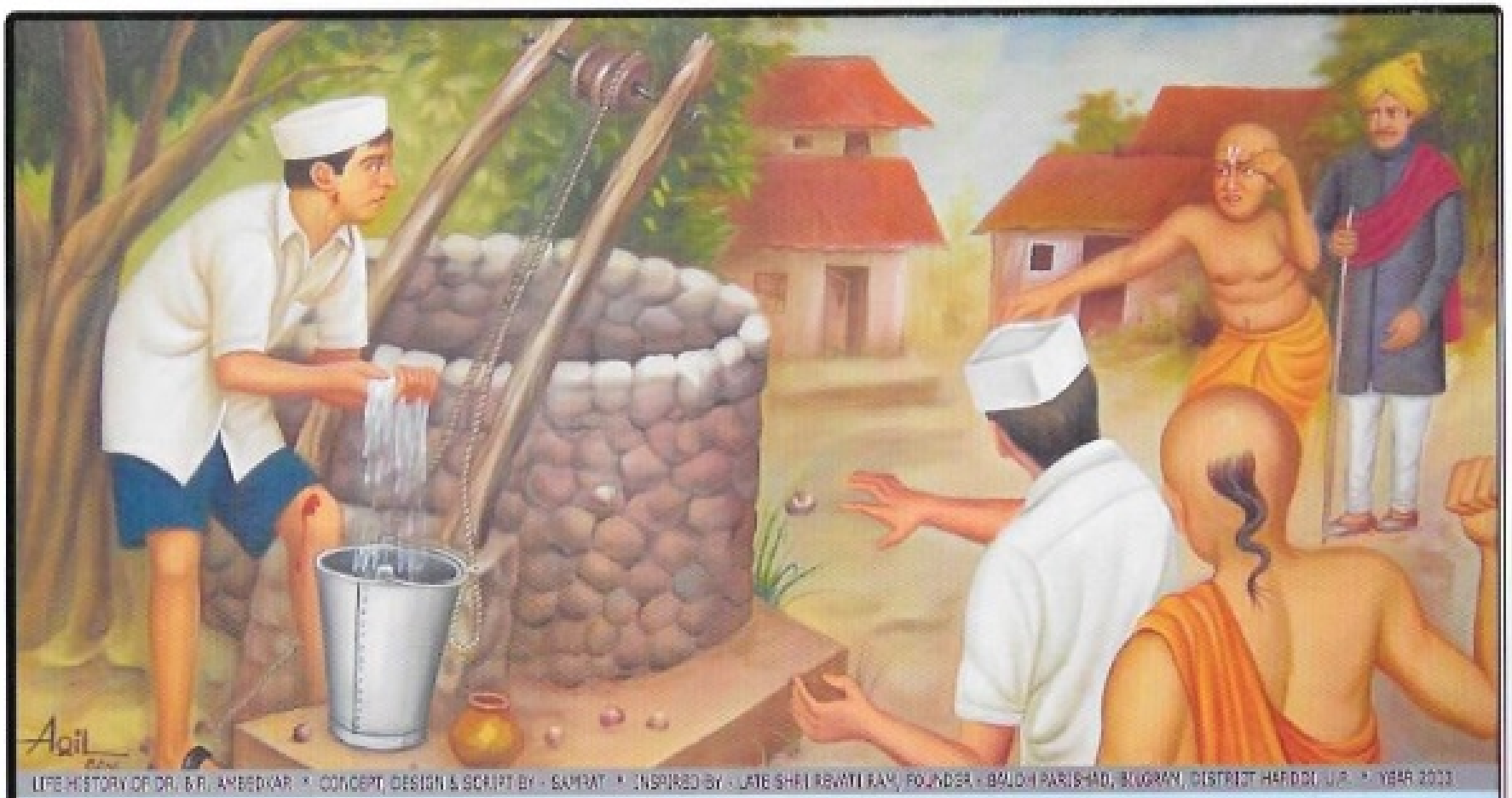

(6) अन्धा समाज– हिन्दुओं की अन्धविश्वासी मान्यता है कि दलित के छूने से पानी अशुद्ध हो जाता है जिसे गाय के मूत्र और गोबर आदि डालने से ही शुद्ध किया जा सकता है। यानि कि दलित गोबर से भी गन्दा है। जब बालक भीम ने प्यास लगने पर कुँए से पानी निकाल कर पी लिया तो ब्राह्मणवादियों ने उसे पत्थरों से मारा।

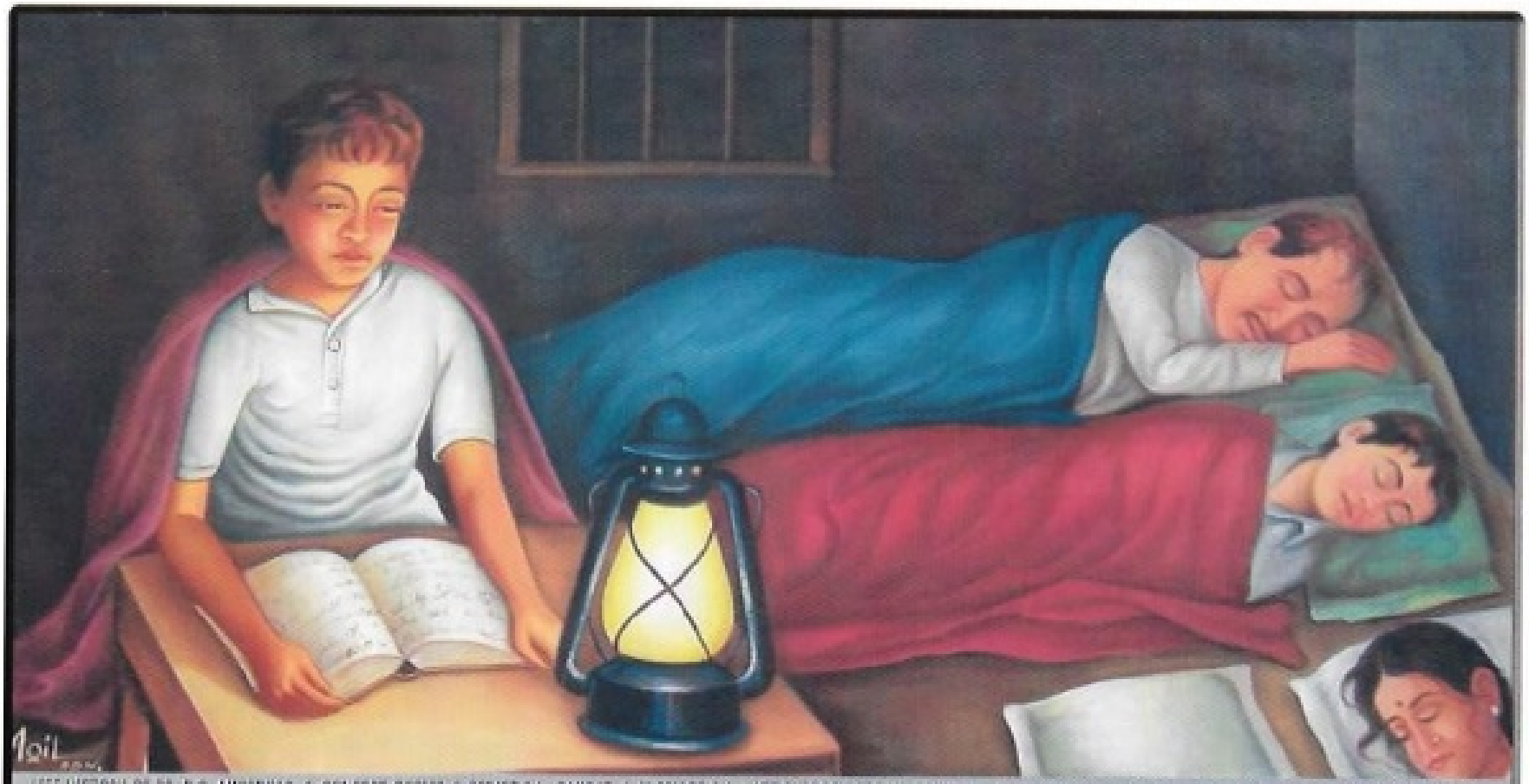

(7) अध्ययनशीलता– भीम का बचपन बहुत गरीबी में बीता। उनका बड़ा सा परिवार एक ही कमरे में गुजारा करता था। बालक भीम को पढ़ने का बहुत शौक था। एक ही कमरा होने के कारण भीम को एकान्त नहीं मिल पाता था। उनके पिता उनको रोज सुबह तीन बजे उठा देते थे। भीम खूब मन लगा कर पढ़ते और एक दिन दुनिया के बहुत बड़े विद्वान बन गये।

(8) विदेशों में शिक्षा– भीम की योग्यता से प्रभावित होकर महाराजा गायकवाड़ ने उनको उच्च शिक्षा के लिए अमरीका भेज दिया। वहाँ छुआछूत नहीं थी। वहाँ जाति से नहीं, योग्यता से आदमी इज्जत की जाती थी। वहाँ भीम को पढ़ने के लिए बहुत अच्छा माहौल मिला और वे रोज अठारह घन्टे अध्ययन करते।

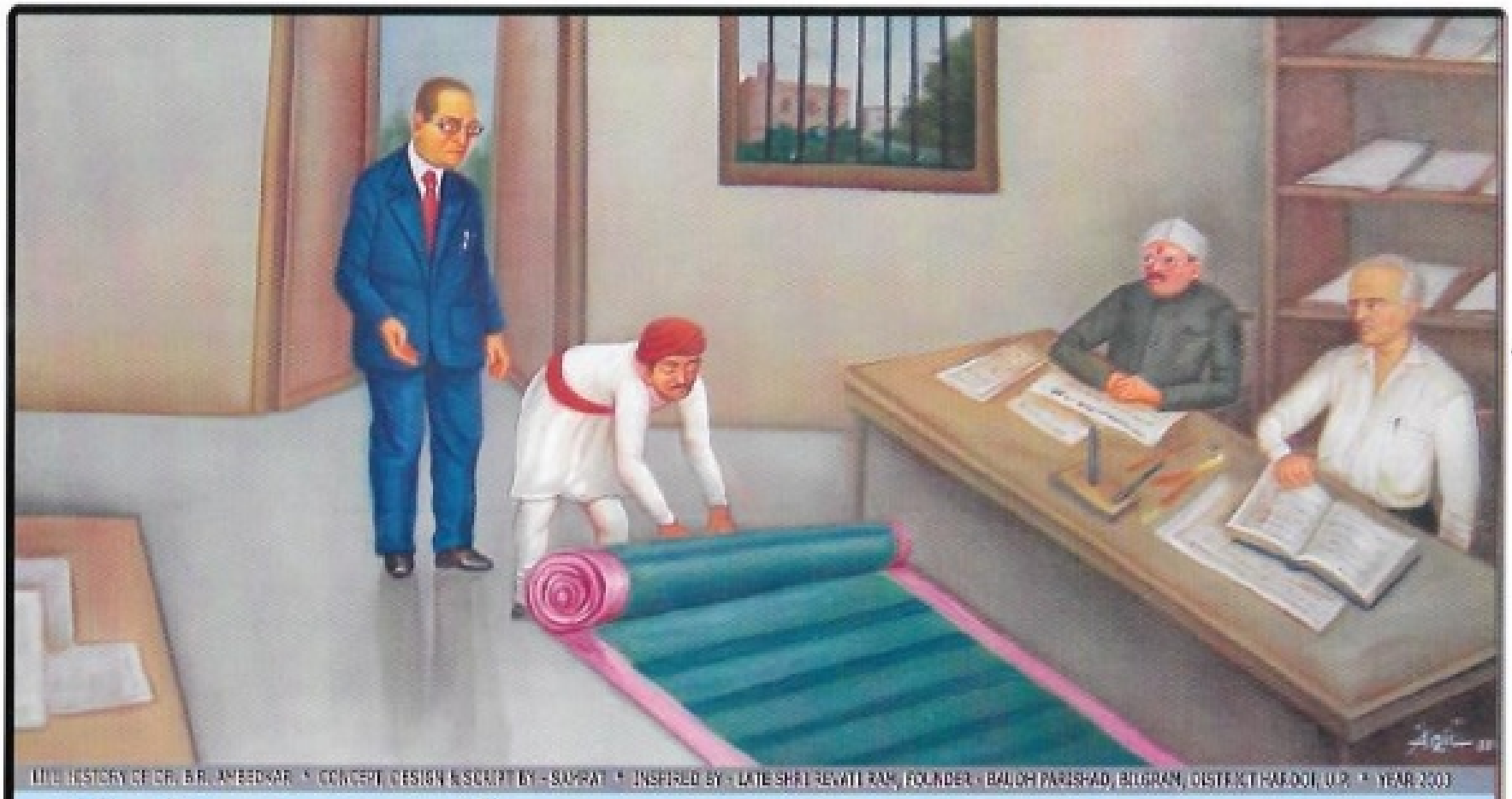

(9) विद्वता का भी अपमान– भीम ने रात दिन पढ़कर सर्वोच्च डिग्रियाँ हासिल की। लोग उन्हें डॉ0 अम्बेडकर के नाम से जानने लगे। ऐसे महान विद्वान का भारत में फूलों से स्वागत होना चाहिए था। लेकिन जब वे महाराजा बड़ौदा के ऑफिस में काम करने के लिए पहुँचे तो चपरासी ने अपवित्र होने के डर से कालीन ही हटा लिया।

(10) संघर्ष की शुरूवात– दलितों को महाड़ गाँव के तालाब का पानी नहीं पीने दिया जाता था। जबकि जानवर भी इसमें पानी पी सकते थे। सन् 1927 में डॉ0 अम्बेडकर ने हजारों दलितों के साथ इस तालाब का पानी पीकर नये संघर्ष की शुरूवात की। इससे अन्धविश्वासी मनुवादी नाराज हो गये। उन्होंनें तालाब को गौमूत्र और गोबर डाल कर शुद्ध किया।

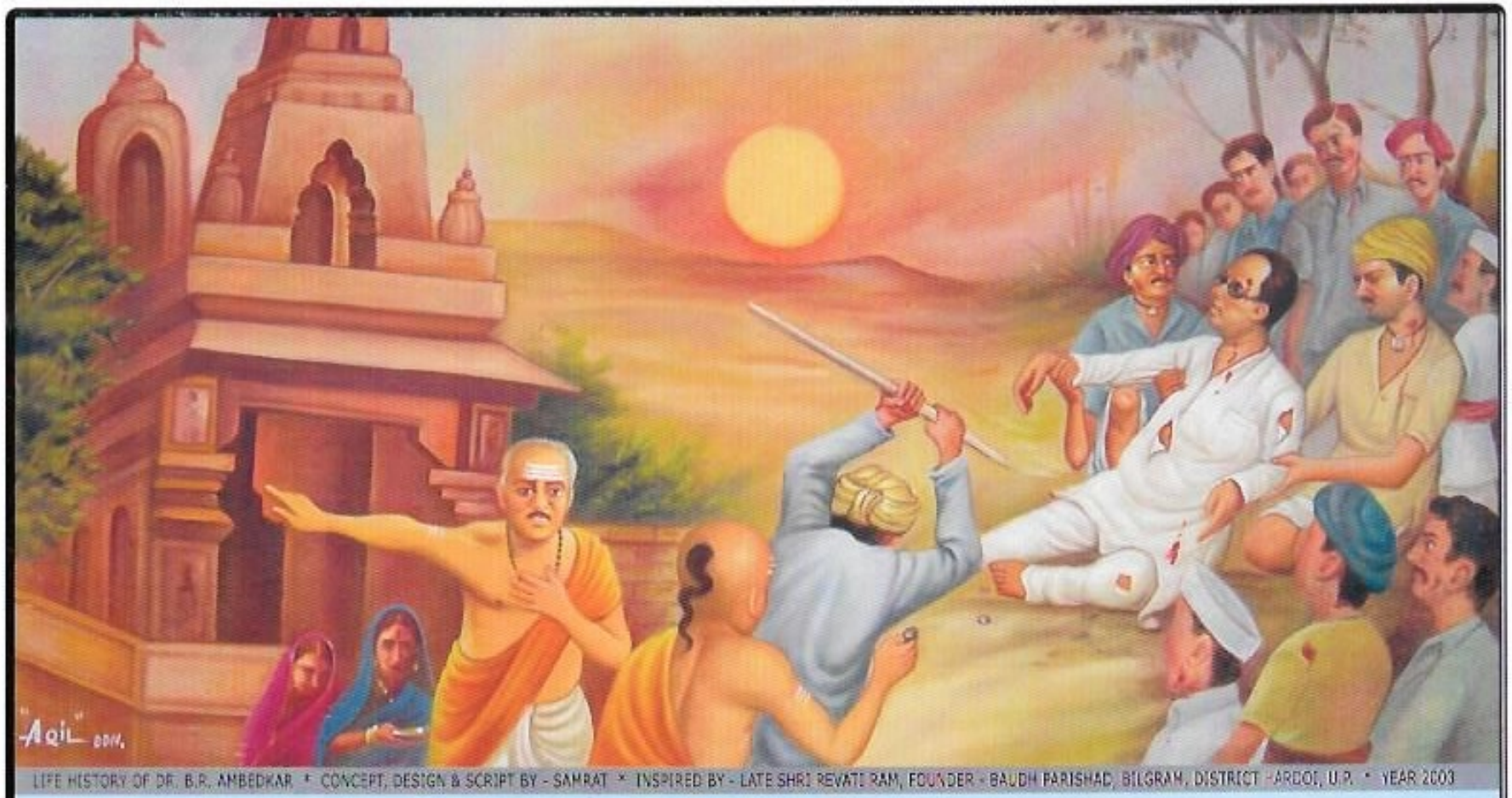

(11) दलित बस नाम के हिन्दू– मुसलमान मस्जिद जा सकता है, ईसाई गिरजाघर जा सकता है तो दलित मन्दिर क्यों नहीं ? सन् 1930 में डॉ0 अम्बेडकर ने जब अपने अनुयायियों के साथ नासिक के कालाराम मन्दिर में प्रवेश करने की कोशिश की तो ब्राह्मणवादियों ने उन पर हमला कर दिया। इससे सिद्ध हो गया कि दलित हिन्दू नहीं हैं।

LIFE HISTORY OF DR. B.R. AMBEDKAR * CONCEPT, DESIGN & SCRIPT BY - SAMRAT * INSPIRED BY - LATE SHRI REVATI RAM, FOUNDER - BAUDH PARISHAD, BILGRAM, DISTRICT HARDOI, U.P. * YEAR 2003

(12) बुराई की जड़– डॉ0 अम्बेडकर को अध्ययन से मालूम हुआ कि दलित भारत के मूल निवासी हैं। आर्यों ने भारत पर आक्रमण करके दलितों को गुलाम बना लिया और अपने धर्म ग्रन्थों में दलितों के खिलाफ जहर भर दिया। हिन्दू धर्म ग्रन्थ ही बुराई की असली जड़ हैं इसलिए डॉ0 अम्बेडकर ने मनुस्मृति को जला डाला।

LIFE HISTORY OF DR. B.R. AMBEDKAR * CONCEPT, DESIGN & SCRIPT BY - SAMRAT * INSPIRED BY - LATE SHRI REVATI RAM, FOUNDER - BAUDH PARISHAD, BILGRAM, DISTRICT HARDOI, U.P. * YEAR 2003

(13) मानवतावादी संविधान की रचना– सबसे योग्य व्यक्ति होने के कारण ही डा0 अम्बेडकर को संविधान बनाने का काम सौंपा गया। उन्होंने रात दिन मेहनत करके लगभग तीन वर्षों में संविधान लिखा। संविधान से ही दलितों, पिछड़े वर्गों व महिलाओं को सदियों के नर्क से मुक्ति मिली है।

(14) बौद्ध धर्म की दीक्षा– दलित हिन्दू धर्म में रहकर बराबरी का दर्जा कभी भी हासिल नहीं कर सकते क्योंकि वे हिन्दू नहीं हैं। वे भारत के मूल निवासी हैं जिनको गुलाम बना दिया गया है। इसीलिए बाबासाहेब ने 14 अक्टूबर 1956 को लाखों लोगों के साथ नागपुर में बौद्ध धर्म अपना लिया।

(15) अन्तिम यात्रा– बाबासाहेब डॉ0 अम्बेडकर असमानतावादी हिन्दू धर्म में पैदा हुए लेकिन समानतावादी बौद्ध धर्म ग्रहण करके परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। 6 दिसम्बर 1956 को उनकी अन्तिम यात्रा में लाखों लोग शामिल हुए। उनके बताये रास्ते पर चलकर ही बहुजन समाज को सम्मान मिल सकता है।

LIFE HISTORY OF DR. B.R. AMBEDKAR * CONCEPT, DESIGN & SCRIPT BY - SAMRAT * INSPIRED BY - LATE SHRI REVATI RAM, FOUNDER - BAUDH PARISHAD, BILGRAM, DISTRICT HARDOI, U.P. * YEAR 2003

(16) अमर सन्देश– बाबा साहेब की मुम्बई स्थित समाधि चैत्यभूमि कहलाती है। बाबा साहेब मानो आज भी कह रहें हों "बौद्ध धर्म सूर्य के प्रकाश की तरह दुनिया में फैला हुआ है। यह जीवन से अंधकार दूर कर देता है। यही हमारा प्राचीन धर्म भी है। अतः अन्धविश्वास के जाल से निकलो और बौद्ध धर्म अपनाओ।"

बाबा साहेब के संदेश

1. अपने बच्चों को शिक्षा दो। उन्हें महान इन्सान बनने के लिए प्रेरित करो। उनके मन से सारी हीन भावना निकाल दो।
2. रोटी, कपड़ा और मकान आपके जन्म सिद्ध अधिकार है। अधिकार माँगने से नहीं संघर्ष करने से मिलते हैं।
3. संघर्ष में सफलता अपनी आरामतलबी का बलिदान देने से ही मिलती है।
4. बलि बकरे की दी जाती है, शेर की नहीं। इसलिए शेर बनो, बकरा नहीं।
5. उस धर्म में रहने से कोई फायदा नही जहाँ इज्जत और बराबरी का दर्जा ना मिल सके।